इकाई - 2

Unit-2: बच्चों का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास

• शारीरिक विकास की समझ

शारीरिक विकास का सन्दर्भ वृद्धि और शरीर में आए विभिन्न परिवर्तनों से है जिसमें बालक के आकार, भार, ऊँचाई, हड्डियों की मोटाई, मनोगत्यात्मक कौशल, दृष्टि, श्रवण आदि में आए परिवर्तन सम्मिलित हैं। विभिन्न विकासात्मक अवस्थाओं में बच्चे के आकार, शक्ति, अंगों तथा ज्ञानेन्द्रियों में विशिष्ट परिवर्तन आते हैं।

विकास के विभिन्न अवस्थाओं में होने वाले शारीरिक परिवर्तन

	अवस्था	शारीरिक परिवर्तन
1.	शैशवावस्था (Infancy 0-2 वर्ष) व पूर्व बाल्यावस्था (early childhood 2-6 वर्ष)	• शारीरिक विकास तीव्र ; एक वर्ष के अन्दर हड्डियाँ, मांसपेशियाँ एवं अन्य अंग इतने विकसित हो जाते हैं, जिससे शिशु बैठने एवं खड़े होने में समर्थ हो जाते हैं। • तीन वर्ष की आयु में उसके पूरे दाँत निकल आते हैं, हाथ पैर एवं पुट्ठे मजबूत हो जाते हैं। • सभी इन्द्रियाँ सक्रिय हो जाती हैं। भार एवं लम्बाई में निरंतर वृद्धि होती है। • 6 वर्ष की आयु तक विकास गति मन्द हो जाती है। परन्तु उनकी कर्मेन्द्रियाँ एवं ज्ञानेन्द्रियाँ सुदृढ़ होती जाती हैं।
2.	उत्तर बाल्यावस्था (Later childhood 6-12 वर्ष तक)	• शारीरिक विकास मंद होकर स्थिरता की ओर • हो चुके शारीरिक विकास में दृढ़ता। • शारीरिक क्षमताओं में अभिवृद्धि होती है।

3.	किशोरावस्था (Adolescence 12-18 वर्ष तक)	• इस अवस्था में किशोर के विभिन्न लक्षण शरीर में परिलक्षित होते है। जैसे – भार एवं लम्बाई में वृद्धि, शारीरिक संरचना एवं मांसपेशियों में सुदृढ़ता, दाढ़ी एवं मूँछे निकल आना आदि। किशोरियों में रजोदर्शन स्तनों में उभार, कुल्हों में उभार, शारीरिक आकर्षण में अभिवृद्धि आदि परिवर्तन आते है।

• मनोगत्यात्मक विकास की समझ

मनोगत्यात्मक विकास का संबंध माँसपेशियों के कार्य तथा शरीर में गतियों या क्रियाओं की उत्पत्ति से है जो मानसिक क्रिया के सचेतन नियंत्रण के अन्तर्गत होती है। यह गत्यात्मक कौशलों से निर्देशित होती है जैसे – गति, समन्वय, परिचालन दक्षता, बल तथा चाल। बच्चों के सर्वांगीण विकास में उनके मनोगत्यात्मक विकास का होना अति आवश्यक है। मानव शिशु जन्म के समय असहाय होता है परन्तु आयु में वृद्धि के साथ-साथ अपनी मांसपेशियों की गतिविधियों पर नियंत्रण करना सिखने लगता है। और इस नियंत्रण के कारण ही क्रियाओं में विशिष्टता दिखाई देने लगती है।

• बच्चों के शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास की समझ

बालक का शारीरिक एवं मनोगत्यात्मक विकास एक स्वभाविक प्रक्रिया है। शरीर के आकार, कंकाली संरचना, अस्थियों, मांसपेशियों तथा दाँतो में आए परिवर्तन, बच्चों के शारीरिक विकास में योगदान देते है। शारीरिक परिवर्तनों के

Scanned by CamScanner

Scanned with CamScanner